

३  
इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक

४२०१/१४०० (६०१)

ग्रंथ नाम

शिवजी कथा

विषय

कथा-पुराणे

२६  
मराठी

कथा

सोमयज्ञे करंजे, क-इ-मिष्टी

१९०१ पु. ११०

~~मराठी~~



कथा

क-इ-उ-



२॥ नागाननस्तउनिमागतसेसु  
 बुद्धी॥ पाणीद्वयस्तविलसेहरिया  
 कुबुद्धी॥ देस्फुलिसुंदरजसीमन  
 कामनेची॥ कौतिसुधामयसुचेत्रि  
 पुरांतकाची॥ ३॥ वाग्देवनास्तविल  
 अल्पमतीअनादी॥ कुंजोडवाकु  
 मरिपद्यपिठाअनंदी॥ कुंदेदुश्वे  
 लवसनेनृतगायनातौवाशी  
 सुरंगविकथारसआदिमाते॥ ४  
 ॥ चैतन्यसिंधुसरीताविधिची  
 कुमारी॥ होंसासनीआरुढलीस  
 गुणावतारी॥ आज्ञानभांतिनि  
 रसीनिजबळकाची॥ लक्षणाव  
 श्री



ह्मनिबसो... तीर्तनाची॥ ४  
 ॥ वंदेनिया... चरणार  
 विंदा॥ स्वामीहृपाघनकरीमज  
 बुद्धिमंदा॥ नुसेदयेविणकदान  
 सुचेष्टलीसी॥ कैवल्यदायकक  
 थावदवीमतीसी॥ ६॥ विनउनि  
 मुनिसंतारसज्जनाश्रोतियासी॥  
 स्तउनिवरप्रसादेमागतांहस्त  
 कासी॥ सिक्कथनप्रयागाबोध  
 चालोपुढारी॥ जडमुढजिवजं  
 लूपाविजेपैलपारी॥ ७॥ कैला  
 सीश्रीशंकराप्रतिपुसेप्रसोत्त  
 रेअंबिका॥ काहीयेकरसाळपा  
 रनेजगासांगादिळाकौतुका॥ ८

चुकंदा प्रति बोला परि सिले तो हे  
 लमासे मनी ॥ सि बरात्री मृगभिष्ट  
 वर्त्तलिक थोरेके जग नोहनी ॥ ७  
 ॥ सोमदंत नृपति हो अवधारी ॥ ८  
 शतकपोच ललना अविचारी ॥  
 निसिदिनी विराय संगति गोडी ॥  
 पूर्व जोर वरवा करि जोडी ॥ ९ ॥ सिः ॥  
 तये माजि दाघी सुसीळा प्रिया हो ॥  
 स्वधर्माचरे वर्त्तण सक्रिया हो ॥  
 रमापातके देह कळोत आलाम  
 नृपाला गिधर्मे तइं श्राप दीळा ॥  
 १० ॥ पुन्हा जे नघे सी तृगा कानना  
 ले ॥ तृणा भृगु सि सी तो गि सी अस अ  
 न्ना ॥ ऐसा श्रापुनी कास घाली गि  
 वासी ॥ नृपाला तये मंगे ला पु  
 रीसी ॥ ११ ॥ कसदनी सि  
 जवीती ॥ देह कळोत आलाम  
 पीती ॥ लसले भद्र इक वळीती  
 ॥ विंगळ भूमि सित्या निजवीती  
 ॥ १२ ॥ ऐसा दुनी जे नघाली मृ  
 गाचा ॥ तये संगती सुंदरी ही मृगी  
 चा ॥ देहे पाउनी वर्त्ते ती येक चित्त  
 ॥ तृणा अहर स्या हो तसे नित्य नि  
 त्य ॥ १३ ॥ गंधर्व गायन करी आसा  
 वलीते ॥ उन्मल मद्य अहरी पउ  
 ता स्वराते ॥ कोंपो निश्राप दिधज  
 सुरनायकाने ॥ रेभिष्ट मांस उअह  
 री मृग सायकाने ॥ १४ ॥ शापघोर  
 पतनी गणपावे ॥ भिष्ट हि जे नकु  
 ल हिं सकसावे ॥ जाल कर्म पठणे



नज बुद्धी ॥ परस्विया मृगवधाथ  
कुबुद्धी ॥ १५ ॥ ये के दिनी पारधि  
जो निघाला ॥ फांसे धनुष उमि  
चालिये ला ॥ वनों तर शोधिल  
से मृगा ले ॥ द्रिष्टी न देखे रवि हो  
य अनस्त ॥ १६ ॥ घरा जा व्यापार  
धी लाग वेग ॥ त्वरे देखे लें पूर्ण  
ये कल उगें ॥ तया मि वत्या वेषु  
रापो ल जाळी ॥ स्वये रक्षितो बेस  
ला बिल्व जाळी ॥ १७ ॥ सवाई ॥  
मुष्टि भरी लिळ लें दुळ गो ॥ धुम मां  
सक मत्सुर घे क्षुधितार्थ ॥ तार  
कपात्र जळें करि पूर्ण सवेग च  
दो निरु विल्लासो ॥ कंठ कच्छि

द्रपडे पवन गालि पात्र चिहोगळ  
ली स्ववे तीले ॥ मंत्र लया हरण हर  
ण लव दोष त्रणा परि भस्म लया ले  
॥ १८ ॥ मेढा करे वाहु निलक्षिता हे  
॥ सन्मस्व जे पत्र हिलो डिला हे ॥ वे  
णें पुजा शंकर पार्वती ची ॥ विष्टी  
विधानें घ उली लया ची ॥ १९ ॥ तो  
षो निचक्र वति पारधि पूजना सी  
॥ आनंद सिंधु भरिला ॥ निसि पूर्ण  
मे सी ॥ हे लाव दे ल व र संक्षित ध  
र्म राया ॥ वेगें गमो नि करि पारधि  
दिव्य काया ॥ २० ॥ रज मित्र हर चतु  
र्भाग जो राहिला से ॥ जग हर सिव  
अज्ञा बंदुनी पा तला से ॥ स क्रपव

रदवाक्ये वो पुनी भिल्लटाते ॥ पुन  
रपिस्वरदीर्घे हाकदे पारध्याने ॥  
२१ ॥ ऐकोनिहा कालव पारध्याने ॥  
नबोलवे बोलतया मुखाने ॥ नि  
शाचरी की वन देवता हे ॥ भयातु  
रें होउनि पाहता हे ॥ २२ ॥ जाणे ॥ ५

निआंतर वदे तव वं उपाणी ॥ ना  
भीनिशाचर न के वन देवतीणी  
॥ त्रिपुरांत कें तुजलावर द्याव्या  
सी ॥ त्रैलोक्य आदिक रुनी दिध  
ले सुखासी ॥ २३ ॥ जन्मांतरि पर्व  
तपालकाचे ॥ केले बहु म्यामृगबा  
ळकाचे ॥ इत्यादिक मसिहिनी

तिनाही ॥ जायात कीया वर दे सि  
काही ॥ २४ ॥ यत्न वदे शंकर पूजि  
ला हो ॥ तो बिल्व पत्रे सिव तोषला  
हो ॥ उपोशणे ध्यान घडे हाराचे ॥  
निर्मूळ जालें भवपालकाचे ॥ २५  
॥ म्हणे पारधी स्वर्गिची चाउनाही ॥  
करी कर्म हेची दिसे गोउपाही ॥ मृगा  
पक्ष्या बोलणें सूचवावें ॥ बहुसा  
र्थनाही त्वरे हेचि द्यावें ॥ २६ ॥ वदे ॥ ५A  
धर्म रावो तथास्तु त्रिशुद्धी ॥ प्रसंगी  
चुके जायातो मंद बुद्धी ॥ आन  
घ्यासि प्राप्ती पुढे अंध होये ॥ ते  
सा पारधी वा घुराला गिपा हे ॥ २७

बराबोपुनीधर्मगेलापुरीसी॥ ७  
खगेंद्रानुजंपातलाहोरवीसी॥  
फांसेपारधीशोधितांयेकठाई॥  
मृगादेखिलेंराहिलातोआपाई॥  
२८॥सोमदंतमृगहोजिवनासी॥  
संगतिमृगिणियेकग्रहासी॥जा  
तसेपवनवेगगतीनें॥फांस्विया  
तपउलाकरचरणें॥२९॥गुंतु  
नीमृगपडेधरणीसी॥खुंटलीग  
तिपुसहरणीसी॥ब्रह्मकल्पघट  
लामजलागी॥खरेंतूंगलिकरी  
आनमार्गी॥३०॥ऐकोनउत्तरमृ  
गीरुबनाकरिती॥अष्टांगटा  
कुनिमहीबिबेनवीती॥येतो

मदंतलवृपतसुखवीपाकाया॥  
प्राणाबिनाकुडिजसीकुळदी ७  
पराया॥३१॥सपलवीदक्षधरो  
निपोटी॥सितोदरीलाउनिबा  
षानेटी॥ऐकावयाभाशणत्या  
मृगाचा॥नबोलतंगुसुउभा  
घडीचा॥३२॥सवाई॥बोलत  
सेमृगसुंदरिलागुनिजाय  
वनाषणकाजिवनासी॥  
येईलपारुधिदेखुनिमारि  
लजायखरेउरपुल्यासद  
नासी॥वाठविबाळकरी  
बहुसुंदरवृद्धिघडेअमु

६ प  
च्या कुलवों सी ॥ मद्रु जाणु २  
निकाळ क्रमापरियेइ लसु  
दरिदो लनये सी ॥ ३३ ॥ सील  
बहं अलि दुर्घट को मळ बा  
ळफुटो निहिमें मरलीलें ॥  
जाउनिया स्तन देउनि शां  
तचितो वरिधीर धरु मृग  
बालें ॥ बोलत संधि दुजी मृ  
गिधाउनिया ललिठेउनि खो  
पिस्नेहाळें ॥ येरिवदे अहाका  
यवोसा जपि बाळ लयावनी  
भयपिउतीलें ॥ ३४ ॥ लुश्या  
बाळका इनि मसं दयाळे ॥

तयारक्षित मउली लं कृपा  
ळे ॥ आ म्ही जाउनो स्वामिसे  
वाश्रिकारुं ॥ वृथाराहणे भू  
मिवेद्व्यभा रू ॥ ३५ ॥ दुजी  
मृगी बोले कुरंगिणी तें ॥ स्वा  
मी संवे जाईन आजिसत्ये ॥ ३६ ॥  
येरुवेदे जाठनिया लुरेसी ॥  
युक्ता लुंही सुदरि बाळकासी  
॥ ३७ ॥ वंदो निया पति वलानि  
वतां लुरेने ॥ रभोरि बाळकद  
येपिउती सितानें ॥ पांचारुनी  
उभयतां स्तन पाने देती ॥ परं  
परं मृगि णिस्या निरुजनि घेती ॥

३७७ ॥ इन्द्रो बलिं स वदे जननी  
 ये ॥ केविदुःख हृद ई व द माये  
 ॥ ये कली ग मुनि मा ग तिये सी ॥  
 ता त भा ज न य ती प र दे सी ॥  
 ३८ ॥ तु म्हा पूर्व जा दे हे क ल्यां  
 त आ ला ॥ अ म्हा ला गि जा णे  
 अ से सं ग ती ला ॥ त्व रे बा ल  
 के उ र ली व्य ग्र चि त्तं ॥ पु टे धां  
 व घे ती पि त्या ला गि आ ते ॥ ३९  
 ॥ ये री क उ म् गि णि ला गु नि  
 सो म दे ती ॥ नि र्वा ण नि र्वा ण व  
 दे अ लि धी र शी ती ॥ शं ती क  
 हा फ णि बु धि ने म् ख का ले  
 ॥ कां ते वृ था मु क सि हो सि ल  
 प्रा ण आं त ॥ ४० ॥ वि यो ग ची  
 वा णी प ड त श्र व णी श ड्ढ णि  
 म नी ॥ आ हा शं भू ध्या ती च्छु क्त  
 वि प ति या अ जि म र णी ॥ सु  
 रा री ज्या मा त प्रिय अ र र न  
 प्रा णा र्त्त स्म र ती ॥ रो ती कां ता  
 री या क्षा णि म् ज ध णी को ण  
 ज ग ती ॥ ४१ ॥ जे वृ था ज नि  
 क टा बहु लो ले ॥ स त्थ भा व  
 अ न नी म् दु बो ले ॥ जी व न

रहितभासतिगंगा॥ दीपका  
विषाकुडीनिसिंहा॥ ४२॥  
सुंदराकमळनासिकनाही॥  
सुंदराकुचविनारसनाही॥  
सुंदरानकं गरिवृक्षचिना  
ही॥ सुंदरारमणिकांतचि  
नाही॥ ४३॥ तैसियापरिग  
तीमजलागी॥ ऐरियापरि  
वदानिकुरंगी॥ स्वामिद्रोहस  
गठेममउंगी॥ दयकुळर  
वरवीमजयेशी॥ ४४॥ न  
घउतांजरिचवेमृतिभूषणा  
॥ नपडतांजरिपडेकुळकं  
दना॥ नचकलाजरिचळे  
सिवपूजना॥ नगमताजरि  
गमेउनकानना॥ ४५॥ ल  
क्षुमीरमणसेवितरामा॥ शै  
ल्यज्यापतिरुचीनयकामा॥  
यापरीकुलवतांतरिनाही॥  
वेदशास्त्रश्रुतिदेतिलगाही॥  
४६॥ नानापरीवृषचरीविल  
फोनिदेहा॥ सांडीमहीवरिपु  
न्हाउनफळेनिवाह्या॥ पाहोनि  
भिद्धत्वरितागतिपातलाहो॥

आष्टांगपारधिकुरंगिणिप्रा  
थिलाहो ॥ ४७ ॥ पित्तातुं ज्या  
मात्मानकरिपतिघालामज  
करी ॥ करीलेणीदेणीनिजल  
नयभर्त्ससुखकरी ॥ करीक  
न्यादानादिनत्रितियपाहीव  
धुवरा ॥ वरादेईसाडानिज  
रुहिपांसोउत्तरिकरा ॥ ४८  
॥ उभयताजळधेउनिमाग  
ती ॥ नलगतांपळवोत्तरिता  
गती ॥ साक्षात्केशशिलोक  
मलापती ॥ सत्यसत्यआननी  
मृगिवोलती ॥ ४९ ॥ सर्वाई ॥ मि

१०  
१०A  
१०B  
१०C  
१०D  
१०E  
१०F  
१०G  
१०H  
१०I  
१०J  
१०K  
१०L  
१०M  
१०N  
१०O  
१०P  
१०Q  
१०R  
१०S  
१०T  
१०U  
१०V  
१०W  
१०X  
१०Y  
१०Z  
१०AA  
१०AB  
१०AC  
१०AD  
१०AE  
१०AF  
१०AG  
१०AH  
१०AI  
१०AJ  
१०AK  
१०AL  
१०AM  
१०AN  
१०AO  
१०AP  
१०AQ  
१०AR  
१०AS  
१०AT  
१०AU  
१०AV  
१०AW  
१०AX  
१०AY  
१०AZ  
१०BA  
१०BB  
१०BC  
१०BD  
१०BE  
१०BF  
१०BG  
१०BH  
१०BI  
१०BJ  
१०BK  
१०BL  
१०BM  
१०BN  
१०BO  
१०BP  
१०BQ  
१०BR  
१०BS  
१०BT  
१०BU  
१०BV  
१०BW  
१०BX  
१०BY  
१०BZ  
१०CA  
१०CB  
१०CC  
१०CD  
१०CE  
१०CF  
१०CG  
१०CH  
१०CI  
१०CJ  
१०CK  
१०CL  
१०CM  
१०CN  
१०CO  
१०CP  
१०CQ  
१०CR  
१०CS  
१०CT  
१०CU  
१०CV  
१०CW  
१०CX  
१०CY  
१०CZ  
१०DA  
१०DB  
१०DC  
१०DD  
१०DE  
१०DF  
१०DG  
१०DH  
१०DI  
१०DJ  
१०DK  
१०DL  
१०DM  
१०DN  
१०DO  
१०DP  
१०DQ  
१०DR  
१०DS  
१०DT  
१०DU  
१०DV  
१०DW  
१०DX  
१०DY  
१०DZ  
१०EA  
१०EB  
१०EC  
१०ED  
१०EE  
१०EF  
१०EG  
१०EH  
१०EI  
१०EJ  
१०EK  
१०EL  
१०EM  
१०EN  
१०EO  
१०EP  
१०EQ  
१०ER  
१०ES  
१०ET  
१०EU  
१०EV  
१०EW  
१०EX  
१०EY  
१०EZ  
१०FA  
१०FB  
१०FC  
१०FD  
१०FE  
१०FF  
१०FG  
१०FH  
१०FI  
१०FJ  
१०FK  
१०FL  
१०FM  
१०FN  
१०FO  
१०FP  
१०FQ  
१०FR  
१०FS  
१०FT  
१०FU  
१०FV  
१०FW  
१०FX  
१०FY  
१०FZ  
१०GA  
१०GB  
१०GC  
१०GD  
१०GE  
१०GF  
१०GG  
१०GH  
१०GI  
१०GJ  
१०GK  
१०GL  
१०GM  
१०GN  
१०GO  
१०GP  
१०GQ  
१०GR  
१०GS  
१०GT  
१०GU  
१०GV  
१०GW  
१०GX  
१०GY  
१०GZ  
१०HA  
१०HB  
१०HC  
१०HD  
१०HE  
१०HF  
१०HG  
१०HH  
१०HI  
१०HJ  
१०HK  
१०HL  
१०HM  
१०HN  
१०HO  
१०HP  
१०HQ  
१०HR  
१०HS  
१०HT  
१०HU  
१०HV  
१०HW  
१०HX  
१०HY  
१०HZ  
१०IA  
१०IB  
१०IC  
१०ID  
१०IE  
१०IF  
१०IG  
१०IH  
१०II  
१०IJ  
१०IK  
१०IL  
१०IM  
१०IN  
१०IO  
१०IP  
१०IQ  
१०IR  
१०IS  
१०IT  
१०IU  
१०IV  
१०IW  
१०IX  
१०IY  
१०IZ  
१०JA  
१०JB  
१०JC  
१०JD  
१०JE  
१०JF  
१०JG  
१०JH  
१०JI  
१०JJ  
१०JK  
१०JL  
१०JM  
१०JN  
१०JO  
१०JP  
१०JQ  
१०JR  
१०JS  
१०JT  
१०JU  
१०JV  
१०JW  
१०JX  
१०JY  
१०JZ  
१०KA  
१०KB  
१०KC  
१०KD  
१०KE  
१०KF  
१०KG  
१०KH  
१०KI  
१०KJ  
१०KK  
१०KL  
१०KM  
१०KN  
१०KO  
१०KP  
१०KQ  
१०KR  
१०KS  
१०KT  
१०KU  
१०KV  
१०KW  
१०KX  
१०KY  
१०KZ  
१०LA  
१०LB  
१०LC  
१०LD  
१०LE  
१०LF  
१०LG  
१०LH  
१०LI  
१०LJ  
१०LK  
१०LL  
१०LM  
१०LN  
१०LO  
१०LP  
१०LQ  
१०LR  
१०LS  
१०LT  
१०LU  
१०LV  
१०LW  
१०LX  
१०LY  
१०LZ  
१०MA  
१०MB  
१०MC  
१०MD  
१०ME  
१०MF  
१०MG  
१०MH  
१०MI  
१०MJ  
१०MK  
१०ML  
१०MM  
१०MN  
१०MO  
१०MP  
१०MQ  
१०MR  
१०MS  
१०MT  
१०MU  
१०MV  
१०MW  
१०MX  
१०MY  
१०MZ  
१०NA  
१०NB  
१०NC  
१०ND  
१०NE  
१०NF  
१०NG  
१०NH  
१०NI  
१०NJ  
१०NK  
१०NL  
१०NM  
१०NN  
१०NO  
१०NP  
१०NQ  
१०NR  
१०NS  
१०NT  
१०NU  
१०NV  
१०NW  
१०NX  
१०NY  
१०NZ  
१०OA  
१०OB  
१०OC  
१०OD  
१०OE  
१०OF  
१०OG  
१०OH  
१०OI  
१०OJ  
१०OK  
१०OL  
१०OM  
१०ON  
१०OO  
१०OP  
१०OQ  
१०OR  
१०OS  
१०OT  
१०OU  
१०OV  
१०OW  
१०OX  
१०OY  
१०OZ  
१०PA  
१०PB  
१०PC  
१०PD  
१०PE  
१०PF  
१०PG  
१०PH  
१०PI  
१०PJ  
१०PK  
१०PL  
१०PM  
१०PN  
१०PO  
१०PP  
१०PQ  
१०PR  
१०PS  
१०PT  
१०PU  
१०PV  
१०PW  
१०PX  
१०PY  
१०PZ  
१०QA  
१०QB  
१०QC  
१०QD  
१०QE  
१०QF  
१०QG  
१०QH  
१०QI  
१०QJ  
१०QK  
१०QL  
१०QM  
१०QN  
१०QO  
१०QP  
१०QQ  
१०QR  
१०QS  
१०QT  
१०QU  
१०QV  
१०QW  
१०QX  
१०QY  
१०QZ  
१०RA  
१०RB  
१०RC  
१०RD  
१०RE  
१०RF  
१०RG  
१०RH  
१०RI  
१०RJ  
१०RK  
१०RL  
१०RM  
१०RN  
१०RO  
१०RP  
१०RQ  
१०RR  
१०RS  
१०RT  
१०RU  
१०RV  
१०RW  
१०RX  
१०RY  
१०RZ  
१०SA  
१०SB  
१०SC  
१०SD  
१०SE  
१०SF  
१०SG  
१०SH  
१०SI  
१०SJ  
१०SK  
१०SL  
१०SM  
१०SN  
१०SO  
१०SP  
१०SQ  
१०SR  
१०SS  
१०ST  
१०SU  
१०SV  
१०SW  
१०SX  
१०SY  
१०SZ  
१०TA  
१०TB  
१०TC  
१०TD  
१०TE  
१०TF  
१०TG  
१०TH  
१०TI  
१०TJ  
१०TK  
१०TL  
१०TM  
१०TN  
१०TO  
१०TP  
१०TQ  
१०TR  
१०TS  
१०TT  
१०TU  
१०TV  
१०TW  
१०TX  
१०TY  
१०TZ  
१०UA  
१०UB  
१०UC  
१०UD  
१०UE  
१०UF  
१०UG  
१०UH  
१०UI  
१०UJ  
१०UK  
१०UL  
१०UM  
१०UN  
१०UO  
१०UP  
१०UQ  
१०UR  
१०US  
१०UT  
१०UU  
१०UV  
१०UW  
१०UX  
१०UY  
१०UZ  
१०VA  
१०VB  
१०VC  
१०VD  
१०VE  
१०VF  
१०VG  
१०VH  
१०VI  
१०VJ  
१०VK  
१०VL  
१०VM  
१०VN  
१०VO  
१०VP  
१०VQ  
१०VR  
१०VS  
१०VT  
१०VU  
१०VV  
१०VW  
१०VX  
१०VY  
१०VZ  
१०WA  
१०WB  
१०WC  
१०WD  
१०WE  
१०WF  
१०WG  
१०WH  
१०WI  
१०WJ  
१०WK  
१०WL  
१०WM  
१०WN  
१०WO  
१०WP  
१०WQ  
१०WR  
१०WS  
१०WT  
१०WU  
१०WV  
१०WW  
१०WX  
१०WY  
१०WZ  
१०XA  
१०XB  
१०XC  
१०XD  
१०XE  
१०XF  
१०XG  
१०XH  
१०XI  
१०XJ  
१०XK  
१०XL  
१०XM  
१०XN  
१०XO  
१०XP  
१०XQ  
१०XR  
१०XS  
१०XT  
१०XU  
१०XV  
१०XW  
१०XX  
१०XY  
१०XZ  
१०YA  
१०YB  
१०YC  
१०YD  
१०YE  
१०YF  
१०YG  
१०YH  
१०YI  
१०YJ  
१०YK  
१०YL  
१०YM  
१०YN  
१०YO  
१०YP  
१०YQ  
१०YR  
१०YS  
१०YT  
१०YU  
१०YV  
१०YW  
१०YX  
१०YY  
१०YZ  
१०ZA  
१०ZB  
१०ZC  
१०ZD  
१०ZE  
१०ZF  
१०ZG  
१०ZH  
१०ZI  
१०ZJ  
१०ZK  
१०ZL  
१०ZM  
१०ZN  
१०ZO  
१०ZP  
१०ZQ  
१०ZR  
१०ZS  
१०ZT  
१०ZU  
१०ZV  
१०ZW  
१०ZX  
१०ZY  
१०ZZ

क्षी॥ क्षीरनेदनतया असूनाते ॥  
 तत्त्वतो वदवित्तुं स्वकुळाते ॥ १२ ॥  
 ॥ हरधर वहनाते प्रार्थुनीयाम्  
 गाक्षी ॥ स्वकुळसुहृदजाणे दंडि  
 ताहायपक्षी ॥ तवविरहितआम्हा  
 रक्षिताकोपापावो ॥ घडिघडिवि  
 नवीतीधावण्याधावभावो ॥ १३ ॥  
 शशिवहन कुरंगीलागिसंक्षिप्तवा  
 चे ॥ ऋणचरलुहिआम्हीदेवलो  
 कीसुखाचे ॥ द्विशतगुणसहस्री  
 योजनामाजिवावो ॥ अथवित्तघ  
 उणेहेबोलसीव्यर्थवावो ॥ १४ ॥  
 रविकुलासुतध्यानध्यासनी ॥

रसनिजाय कर्मसेतयामिनी ॥  
 रविसुताशरमंडळरक्षणी ॥  
 रहितभिल्लयकोशरमंडणी ॥  
 १५ ॥ कर्मपाकपरिसीकुलहिं  
 सा ॥ सायकेकरिनिशीदिनिफां  
 सा ॥ सांडसेपिडितित्याअतिका  
 सा ॥ मारिकागतिनकेददनेमा ॥  
 १६ ॥ कारागरीकरुनिमुक्तिस्व  
 खासिदेती ॥ देतीतयानिजपदी  
 सिवदूतनेती ॥ नेलीहशेनिपर  
 संचितप्रापाद्येती ॥ घेतीतयाये  
 मपुत्रीनिकुरेंअघाती ॥ १७ ॥ दा  
 तातूममयाचक्रानिजधनावोपो

निसंलुष्टवी॥ विश्वासंमृगरावसो  
 दुनिजवाकीर्त्तमिहीदाठवी॥ त्या  
 पूर्वीसौभाग्यदर्व्यसदनीविभ्रान्ति  
 तेंपहुउवी॥ प्रिरोनीनिजशक्तिमु  
 क्तिपदवीद्विष्टीत्वरेदाखवी॥ ५८  
 ॥ सबाईरेकुनियामृगिभाशरसो  
 त्यत्तिनिह्रस्वयेमलिकायविचारी॥  
 दोशघंडबहुदुस्तरसंगतिदंड  
 तयाप्रतिहोतशरीरी॥ कोणक्रिया  
 कवणेपरिजाचितिबोलअहा  
 प्रतिबोहृगसोरी॥ धन्यमृणोम  
 गिस्ताधुजनेजगजागुविनेण

तीकुंभअक्षरी॥ ५९॥ सद्गुरुस  
 ज्जनसंतलक्षणपाचनदेखुनिदुर्जे  
 नदोशअरोपी॥ निंदकहिंसक  
 लश्करज्यारकज्यारणमारकमे  
 दकपापी॥ माविकडांभिकपीडक  
 द्रोहकयाचकगौतुमिदेखुनिदा  
 पी॥ पित्रुद्रोहितमात्रुसिबंधक  
 क्रुधनसाधकरवरविप्रासी॥ ६०  
 ॥ मृगिबचनकुठारीभेदताकान  
 नाते॥ परममनिसुखाचेभिहृज्या  
 काननाते॥ लवमृगचरणीचा  
 फांसकाटीत्वरेसी॥ सिबसिब  
 हरनामैराहिलातोउदासी॥ ६१॥

लगबग मृदो नही जाउ नीया तरा  
 सी॥ सरसर जळ पांने प्रासु नीया  
 निमिसी॥ नलग तपळसे धीपा  
 तली पारध्याते॥ म्हणति वधक  
 राहो कष्ट लादूरि पेंथें॥ ६२॥ कु  
 टुबी बहल क्षिती मार्ग लुक्षा॥ त्व  
 रे घेउनी जाई जे प्राण माशा॥ कु  
 रंगा चिया भाशा पीडो लता हे॥  
 चमत्कारनी अंतरी शोध पाहे॥  
 ६३॥ कुरंगी वदे पारध्या पुष्ट भा  
 री॥ वधूनी जरी नेतसा कष्ट भा  
 री॥ स्वदं पत्य तु श्याग्रहा लागि  
 येउ॥ स्वसंतोष आम्ही देहादा

नदेउ॥ ६४॥ उपाशी घनी हिंड  
 ता कष्ट लासी॥ गृही बाळके पी  
 उती पारण्यासी॥ तुवा स्वार्थसा  
 उनिया मुक्तकेले॥ म्हणे मिळते  
 यो मृगाके विमो ल॥ ६५॥ युक्ता  
 उरस मुगी लवला ही॥ धाउनी मि  
 ळतिसत्वर पाही॥ पंचके मिळ  
 णियेक मिळाली॥ पारधी हे म्ह  
 पाल पांच आमोली॥ ६६॥ मृग  
 म्हणे श्रुणु पारधिलत्परी॥ सत्य  
 जे टळति त्या नरकोदरी॥ धीर  
 व्यर्थ न करी तनु अर्पिली॥ पार  
 धी हे म्हणत पांच आमोली॥ ६७॥

पतिव्रताभृगिबोललियादेह्या॥  
 पतिमुळीगमतां सुरवयादेह्या॥  
 पुत्रहरणकक्रियाघडलांभली॥  
 पारधीहेमूणतपांचअमोली॥६८  
 ॥दशरथानुजसेउनिकानेने॥  
 कांतिचाचिलयतोष्टपनेंदने॥  
 वृद्धकावडिगमेरजनीपली॥पा  
 रधीहेमूणतपांचअमोली॥६९  
 वृद्धतीनकरिसुककपानिधी॥  
 उभयबाळकहेसुळिलुवधी॥मु  
 ष्कसाडुनिसुदूबहुचांगली॥  
 पारधीहेमूणतपांचअमोली॥  
 ७०॥



क्षेत्रियाजिरिठकेरणधीरा॥वे  
 दकजिरिठकेक्रियनीरा॥पार  
 धीजिरिठकेमृगमारा॥त्यागनी  
 नकेअधोगलिद्वारा॥७१॥पाड  
 सावचनिष्ठासतधारा॥तोषना  
 मनिबहुउपचारा॥हस्तपुष्टि  
 वरिलोफिरवीतु॥क्षेमदेउनित  
 पासुतवीतु॥७२॥मृगमूणेल  
 लनानिजबोछका॥पिडिलिदु  
 र्जेनजेदिजयाचका॥देहेचेचु  
 नितयासुखपाविजे॥नघडतां  
 तनुसाडुनिजांईजे॥७३॥पांचा  
 चीमतिरेकरूपनयनीदेखोनि

या कानमी ॥ त्रिमे डड्ड तगि लुअं  
तरिव देहे बुद्धि या सीवनी ॥ पूर्वि  
हे जति सिद्ध च्या र्णा गमे संस्का  
रभावे मनी ॥ शापो की मृग देहे  
५ पाउनि वनी वस्ती कि उ दे उनी ॥

७४ ॥ पांचाले आभयो तरे वनव  
रे वोपो निचां डे श्वरे ॥ ते संधी सि  
वपुष्प के सिव गणे घे वोनि आले  
त्तरे ॥ शापामे चन पाचही लृण  
चरे केली गणे सुदरे ॥ दे दिप्यनि  
जकांति पुष्प कटही नृपे सहसा  
दरे ॥ ७५ ॥ पेरि मळ मृदांग दो  
लग जरे धो धो दमा मे किनी ॥

पावेशे स्वस सन या अलगुजी  
कर्पो लुरे वा जनी ॥ ते पो संगित  
राजया समिप त्या अशंगना ना  
चती ॥ चां उ दे खुनि प्रार्थि त्या  
५ नृप वरा या दे हे के वी गती ॥ ७६ ॥  
सोम दंत पुठ ती प्रानि बोधी ॥ ती  
र्थ राजशशि पर्वत मां दी ॥ शशि  
र लो मुळ मास चि संधी ॥ सिव  
नि सी पु जि सां ब समाधी ॥ ७७ ॥  
जाग्रतो क्त सिव की र्त्त नि गो डी ॥  
निर्जे की धरु निया वृत्त जो डी ॥  
जो उ तां भव टे व य म फां सा ॥

साबदेरुतुतेनिजबासा ॥ ७८ ॥  
 भिछुटाप्रनिनृपांमृतवासी ॥ बो  
 धुनीसहकुटुंबविमानी ॥ वाद्य  
 घोषगजरंभजनंसी ॥ पातले  
 सिवपुनीसुखरासी ॥ ७९ ॥ ऐको  
 नियानृपलिभाशसुधारसाते ॥  
 सेवोनितनमयमुनीसुरभीपया  
 तें ॥ यावत्सेसीरुतुसंधिवृतस्त  
 पाहे ॥ प्रेमंविरक्तवदनीसिवसां  
 बबाहे ॥ ८० ॥ ऐशंकरागिरिवरा  
 त्रिपुरारिहंता ॥ तेनीलकंठव्रश  
 भारुठलोकनाथा ॥ ऐशंभवा

शशिधरामजपासराते ॥ तारी  
 भवार्णविबुडदिनकिंकराते ॥  
 ८१ ॥ भूमंडळीजिनमहोठनिधा  
 तकोटी ॥ कल्यांतदेहेवधिले  
 मृगबाळपोटी ॥ लूंमायबापस  
 खयाधणिसोयसहे ॥ कैवलिका  
 सुरपतीउरिदातयाहे ॥ ८२ ॥  
 चांडानिश्रेष्ठमानसीसिव  
 निशीनेमस्तगहेवृती ॥ वि  
 धुकीनृपमास्युक्तविच  
 रेपुजाशाशीपर्वती ॥ तोशे  
 शंकरदुल्लूंसिवगणाद्ये

वानिये रसखा ॥ वाहोनी  
 निजपुष्पकी अति लवरे दे  
 वोनिया चित्सुरा ॥ ८३ ॥ व  
 देनिया सिवगणें सिवपु  
 ष्प कासी ॥ टाको नितत्पर  
 राशी गिरिपर्वतासी ॥ वाहा  
 निया पवनवेगमिलागती  
 ले ॥ देती लयास रयनांक  
 रसेवनाते ॥ ८४ ॥ गृहत्रि  
 गुणानिमागी वासत्याशा

ख्रजीगा ॥ सावयसिवपदा  
 लेपावली पूर्वठेवा ॥ निरिप  
 तिगृहदारासंगती शोभता  
 ती ॥ जनरजनीसुखातेसे  
 विती उर्ध्वपाती ॥ ८५ ॥ आ  
 षादशांतरसुधामयलि  
 गपांही ॥ शोभेजसाकनाकि  
 मुक्तमणी वसाही ॥ साहीवि  
 लर्जुनिमना जनसेवितानी ॥  
 खर्गोसि लुब्धक करिती निज  
 सोख्येवती ॥ ८६ ॥ हिमनगी

प्रति संवसुधा रसा ॥ वदनि  
 सेव विदा वचि आ रसा ॥ सां  
 गडी करुनिसाध कसाधि  
 ती ॥ यम गृहीनि चसेव करा  
 बली ॥ ८७ ॥ हरप्रिय उवरि स्वा  
 मी स्वा मिणी स्कंद वाणी ॥ नृ  
 पवर मुच कंदा तो शवी स्ला  
 ध्य वाणी ॥ जन विजन भवा  
 धी पा व वी पै ल पंथा ॥ सह  
 ज श्रवण पात्र पा व ती मुक्ति  
 पंथा ॥ ८८ ॥ अज्ञान व र्त  
 ति जे न गि वरु जना सी ॥  
 स ज्ञान स गति मुदे सिव  
 की र्तना सी ॥ कानी क का  
 मिनि सि भा सिल काम वे  
 नी ॥ सह ज खि ल्या निर से  
 भ व जे न्म फेरी ॥ ८९ ॥ साम  
 वा सरानि सी सि व पूजा ॥ आ  
 चि ती सुर व रा दि क्क मा जा ॥  
 ब्रं ह उ त्तर क थ्यां तर वं शा ॥  
 शे वि ला भ न ट ठ पर दो शा ॥



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com